थैचरवाद की हकीकत

अजेय कुमार

आठ अप्रैल, 2013 को सत्तासी वर्षीया मारग्रेट थैचर ने लंदन के रिट्ज होटल में आखिरी सांस ली। पिछले कुछ महीनों से उन्होंने इसी होटल को अपना घर बनाया हुआ था। वे ग्यारह वर्षों तक (4 मई 1979 से लेकर 27 नवंबर, 1990 तक) ब्रिटेन की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री रहीं। यानी उन्हें शासन छोड़े लगभग तेईस वर्ष होने को हुए, जब उनका इंतकाल हुआ। इसे उनका विभाजक व्यक्तित्व कहें या करिश्मा कि सक्रिय राजनीति छोड़ने के इतने वर्षों बाद भी उनकी मौत मीडिया में एक बड़ी खबर बन कर आई। इससे पहले उनसे बहुत कम उम्र के ऊगो चावेज की कैंसर से मौत हुई थी। यह देखना बड़ा दिलचस्प है कि वित्तीय पूंजी के सर्वाधिक लोकप्रिय ब्रिटिश साप्ताहिक 'द इकोनॉमिस्ट' ने इन दोनों खबरों को किस तरह पाठकों के सामने रखा। 'द इकोनॉमिस्ट' के एक अंक में मुखपृष्ठ पर बने ऊगो चावेज के चित्र के नीचे शीर्षक दिया गया 'सड़ी-गली विरासत', जबकि दूसरे अंक में मुखपृष्ठ पर थैचर की तस्वीर के नीचे 'स्वतंत्रता सेनानी' लिखा गया था।

ऊगो चावेज के लिए इससे बड़ी श्रद्धांजलि क्या हो सकती है कि ब्रिटिश एकाधिकारवादी घरानों का अखबार उन्हें मौत के बाद भी गाली दे। मारग्रेट थैचर को ब्रिटेन के शासक वर्गों के अखबारों ने उचित ही जिस तरह भावभीनी श्रद्धांजलि दी, वह भी देखने लायक थी। इन श्रद्धांजलियों से ही पता चलता है कि अपने जीवनकाल में मारग्रेट थैचर ने राजनीति में क्या-क्या मुकाम हासिल किए।

नौ अप्रैल 2013 के 'फाइनेंशियल टाइम्स' ने मारग्रेट थैचर को याद करते हुए लिखा: "ब्रिटिश व्यापार और लंदन शहर जितना थैचर का एहसानमंद है उतना किसी और का नहीं हो सकता...। उन्होंने चालीस ऐसे कारोबारी घरानों का निजीकरण किया जिनमें छह लाख लोग कार्यरत थे.....उन्होंने ट्रेड-यूनियनों की जमकर खबर ली..."

उनके जीवनकाल में और बाद में भी थैचर को ब्रिटिश शासक पार्टियों और वर्गों का भरपूर सम्मान मिला। ब्रिटिश पार्लियामेंट का विशेष अधिवेशन 10 अप्रैल, 2013 को बुलाया गया ताकि दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी जा सके। इस सत्र पर लगभग दो करोड़ पाउंड (लगभग डेढ़ सौ करोड़ रुपए) का खर्च हुआ। यह तब, जब पांच दिन बाद यानी पंद्रह अप्रैल को संसद का सत्र होना पहले से तय था। और बिना किसी अतिरिक्त खर्च के इस दिन का इस्तेमाल श्रद्धांजलि देने के लिए किया जा सकता था। दो करोड़ पाउंड खर्च करते वक्त आयोजकों को देश के आर्थिक संकट और आम आदमी के गिरते जीवन-स्तर की याद नहीं आई।

ब्रिटेन की तीनों मुख्य पार्टियों- टोरी, लिबरल-डेमोक्रैट्स और लेबर- के नेताओं में आपसी होड़ लग गई कि कौन थैचर को कितना महान बता सकता है। प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, और कई टोरी सांसदों ने उन्हें 'अद्वितीय', 'महानतम', 'राजनीतिक शिखर-महिला' आदि अलंकरणों से याद किया।

इस सबके बावजूद डेढ़ सौ सांसद इस विशेष सत्र में नहीं आए। और कुछ ऐसे भी आए जिन्होंने थैचर की तीखी आलोचना की। लेबर नेता गलेंदा जैकसन ने संसद अधिवेशन में यथार्थवादी ढंग से बयान दिया "जिस भी चीज को मुझे सिखाया गया कि पाप है, थैचरवाद के तले वह पुण्य मान लिया गया- लालच, स्वार्थपरता, कमजोर वर्गों के लिए लापरवाह रवैया..।" सबसे हैरान कर देने वाली खबर तो यह है कि एक अध्यापक ने अपने स्कूल में 'मृत्यु पार्टी' का आयोजन किया जिसमें लेबर पार्टी के दो नेता शामिल हुए और वहां एक परचा बांटा गया जिस पर लिखा था 'खुशियां मनाओ'।

एक लेबर सांसद स्टीव रॉथरम, जो संसद के विशेष अधिवेशन में नहीं गए, ने टिप्पणी की: "उन्हें बड़े व्यापारिक घरानों और शक्तिशाली और अमीर लोगों का स्नेह मिला, मगर वे समाज के उस बड़े हिस्से की घृणा का पात्र बनी जिस पर उन्हें कभी यकीन नहीं रहा। बहुत लोगों के लिए वे दुख-दर्द की विरासत छोड़ गई हैं।"

कई लोगों को लंदन और ग्लासगो में सड़कों पर नाचते-गाते, शैंपेन पीते हुए उनकी मौत का जश्न मनाते देखा गया। एक ब्रिटेनवासी ने थैचर के पुराने घर के बाहर एक दूध की बोतल रख दी। उसका मकसद लोगों को यह याद दिलाना था कि शिक्षामंत्री होते हुए मारग्रेट थैचर ने स्कूली बच्चों के लिए मुफ्त दूध देने का प्रावधान खत्म कर दिया था। यहां यह याद दिलाना भी प्रासंगिक होगा कि जब थैचर सत्ता में आईं, तब ब्रिटेन में हर सातवां बच्चा गरीब था। जब थैचर का शासनकाल खत्म हुआ, तब हर तीसरा बच्चा गरीब पाया गया।

इसलिए जब राज्य के एक करोड़ पाउंड के खर्च पर थैचर की शव-यात्रा और अन्य इंतजामात किए गए तो सत्तावन प्रतिशत लोगों का मत था कि यह खर्च थैचर के परिवार को उठाना चाहिए। माना जाता है कि थैचर के बेटे मार्क के पास छह करोड़ पाउंड (यानी 420 करोड़ रुपए) की धन-संपदा है और यह सब उसने अपनी मां के संबंधों के बल पर कमाई है।

कुछ का यह भी मत था कि करदाताओं के बजाय यह धन उन व्यापारियों और बैंकरों से लेना चाहिए जिन्होंने उनके शासनकाल में अपार दौलत कमाई। ब्रिटेन के खनन क्षेत्र के मजदूरों के बीच एक व्यंग्य पिछले दिनों बड़ा लोकप्रिय हुआ जिसमें कहा गया कि "थैचर केवल बीस मिनट तक नर्क में रहीं और उन्होंने बीस भट्टियों को बंद करवा दिया।" खान मजदूरों की यूनियन "नेशनल यूनियन ऑफ माइन वर्कर्स" के साथ थैचर का छत्तीस का आंकड़ा रहा। 1984-85 में हुई खान-मजदूरों की हड़ताल लगभग एक वर्ष तक चली।

थैचर प्रशासन को उम्मीद थी कि कुछ ही हफ्तों में मजदूरों का मनोबल टूट जाएगा और हड़ताल नाकाम हो जाएगी। पर ऐसा नहीं हुआ। लिहाजा पुलिस बल के जरिए विभिन्न जगहों पर धरने पर बैठे मजदूरों को खदेड़ा गया। लगभग ढाई हजार मजदूरों की हड्डियां तोड़ दी गईं, उन्हें हाथ बांध कर सड़कों पर घसीटा गया, कई खान मजदूर अपंग हो गए। लगभग दस हजार खान मजदूरों पर मुकदमे चले, गिरफ्तारियां हुईं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि खान मजदूरों की यूनियन एनयूएम ने थैचर की मृत्यु के बाद अपनी वेबसाइट पर लिखा "मारग्रेट थैचर नहीं रही, पर उनकी गलत नीतियों के कारण हुए नुकसान का सिलसिला थमा नहीं। चलो, छुटकारा मिला..."

खान मजदूरों के सफल दमन के बाद अन्य निजी मालिकों के हौसले बुलंद हुए। रुपर्ट मर्डोक ने अपने छापाखानों में छह हजार मजदूरों की छंटनी कर दी। जब मजदूरों ने हड़ताल की तो थैचर ने विशेष मोबाइल पुलिस को भेज कर हड़ताल तुड़वा दी। थैचर के शासन में गैस, दूरसंचार, बिजली, विमानन आदि कई राज्य-उद्योगों के शेयर बेच दिए गए और नए निजी मालिकों ने अकूत संपत्ति इकट्ठा की। साधारण ब्रिटेनवासियों को उनके शेयरों में पैसा लगाने के लिए सरकारी विज्ञापनों के जरिए उत्साहित किया गया।

वर्ष 1987 में दिए एक साक्षात्कार में थैचर ने कहा था 'समाज नाम की कोई चीज नहीं होती'। थैचर के पास गरीबों, उपेक्षित वर्गों, बेरोजगारों और बेघरों के बारे में सोचने के लिए वक्त नहीं था। उनके शासनकाल में गरीबों के लिए घृणा, लालच और व्यक्तिवाद अपने उत्कर्ष पर पहुंचे। चुनाव में उनकी हार का एक मुख्य कारण यह भी रहा कि उन्होंने संपत्ति कर का ढांचा कुछ इस तरह का बनाया जिसमें एक छोटे घर में रहने वाले गरीब व्यक्ति को, विशेषकर लंदन में, एक बड़े महलनुमा घर में रहने वाले अमीर आदमी की अपेक्षा अधिक टैक्स देना पड़ता था। अंततः थैचर को इसे वापस लेना पड़ा, पर इससे जो बदनामी होनी थी उसने अपना रंग दिखाया। उनके अपने कुछ कैबिनेट मंत्रियों ने उनका साथ छोड़ दिया। चुनाव में उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा।

थैचर के पास गरीबों, बेरोजगारों और बेघरों के बारे में सोचने के लिए वक्त नहीं था। उनके शासनकाल में गरीबों के लिए घृणा, मुनाफावाद और व्यक्तिवाद चरम पर पहुंचे। उन्होंने संपत्ति कर का ढांचा कुछ इस तरह का बनाया कि छोटे घर में रहने वाले को महलनुमा घर में रहने वाले की अपेक्षा अधिक टैक्स देना पड़ता था।

मई 1979 में वे चुनाव जीत कर आई थीं। चुनाव की तैयारी के सिलसिले में सत्ताईस जनवरी, 1978 को उन्होंने एक टीवी कार्यक्रम 'वर्ल्ड इन एक्शन' में एक नस्लवादी वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा "लोगों को वाकई डर है कि यह देश एक अलग संस्कृति के लोगों से न भर जाए। हम राजनीति में लोगों की चिंताओं की अवहेलना करने के लिए नहीं, उनका समाधान करने आए हैं।"

उनका इशारा विशेषकर भारतीय और एशियाई मूल के निवासियों की ओर था। इस वक्तव्य के बाद 'नेशनल फ्रंट', जो कि एक नस्लवादी संगठन था, के सदस्यों ने थैचर की पार्टी को जमकर वोट दिए।

थैचर की मृत्यु के बाद कुछ पत्रकारों ने आस्ट्रेलिया के विदेशमंत्री बॉब कार से उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही। बॉब कार ने थैचर को 'घोर नस्लवादी' कहा और बताया कि एक बार वे अपनी पत्नी के साथ थैचर से मिले थे; (बॉब कार की पत्नी हेलेना मलेशिया मूल की हैं) तब थैचर ने एशियाई आप्रवासियों के बारे में उनसे कहा "मुझे सिडनी पसंद है पर आप आप्रवासियों को हावी नहीं होने दे सकते।" बॉब ने कहा कि "अच्छा हुआ मेरी पत्नी ने नहीं सुना।"

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्हें अर्जेंटीना के साथ युद्ध में विजय हासिल करने का श्रेय दिया जाता है। पर जिस ढंग से अर्जेंटीना के जलयान बेलग्रानो को ब्रिटिश सेना ने समुद्र में डुबोया जिससे अर्जेंटीना के 323 नाविकों की मौत हुई, उसकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत भर्त्सना हुई थी।

थैचर पर 'युद्ध अपराध' के लिए मुकदमा चलाने की आवाजें भी उठी थीं। यह सर्वविदित है कि अर्जेंटीना का जलयान तब ब्रिटेन की जल-सीमा से कई किलोमीटर दूर था। पर थैचर ने चिली के तानाशाह पिनोशे की सैन्य खुफिया एजेंसी पर भरोसा किया। चिली की अर्जेंटीना के साथ लंबी सीमा है। पिनोशे सत्ताच्युत होने के बाद भी जब लंदन जाता तब थैचर उसकी आवभगत करना कभी नहीं भूलतीं।

दुनिया भर के तानाशाहों के साथ थैचर की अच्छी मित्रता रही। 'लौह महिला' के संबंध नस्लवादी दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ बहुत आत्मीय थे। जब सारी दुनिया नेल्सन मंडेला की रिहाई की मांग कर रही थी तब उन्होंने मंडेला को 'आतंकवादी' कहा था। कंबोडिया के पोलपोट, इंडोनेशिया के जनरल सुहार्तो के साथ भी थैचर के अच्छे संबंध रहे। जिया-उल हक को आर्थिक सहायता देने में वे आगे रही। उन्होंने अल-कायदा और तालिबान के गुरिल्लाओं की 'स्वतंत्रता सेनानी' कह कर प्रशंसा की, जो कि अफगानिस्तान की कम्युनिस्ट सरकार को गिराने के लिए आतंकवादी तौर-तरीकों का इस्तेमाल कर रहे थे।

दूसरा श्रेय उन्हें और रोनाल्ड रेगन को सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के समाजवादी देशों में साम्राज्यवाद की जीत के लिए दिया जाता है जो कि सरासर गलत है। ये समाजवादी देश अपनी शासक पार्टियों के नेतृत्व की भयंकर गलतियों के कारण तबाह हुए। यह सही है कि थैचर कम्युनिस्ट विरोधी थी, पर सोवियत संघ का ढहना संभव नहीं था जब तक कि वहां का राजनीतिक नेतृत्व ही इसे ढहाने पर उतारू न होता।

यह वाकई बहुत दिलचस्प है कि जिस लोकप्रिय विशेषण 'लौह महिला' से वे दुनिया भर में जानी जाती रहीं, वह नाम पहली बार 1980 के दशक में सोवियत संघ की सेना के मुखपत्र 'रेड स्टार' ने समझौता न करने की उनकी पूंजीवादी वैचारिक हठधर्मिता के कारण दिया था। आज उस विशेषण के अर्थ बदल दिए गए हैं।

तुर्की ब तुर्की

"नई पीढ़ी अंतर ला रही है। हम और आप चाय-पानी के लिए कुछ न कुछ देना मान सकते हैं ताकि काम हो जाए। लेकिन आज की पीढ़ी इसे और बर्दाश्त नहीं करेगी और वही सड़कों पर निकल कर आए थे। (भ्रष्टाचार के विरुद्ध)"

- विनोद राय, पूर्व सीएजी

हमारा कहना है :

- कैग के रूप में विनोद राय ने सरकारी खजाने में लगने वाली बड़ी-बड़ी सेंधों का पर्दाफ़ाश किया। एक तरह से उन्होंने देश में भ्रष्टाचार-विरोधी जनआंदोलनों के दौर को मजबूत किया। उन्होंने कैग को एक संस्था के रूप में बेहद चुनौतीपूर्ण कलेवर भी प्रदान किया। पर उनके सारे कार्यकाल में एक भी मामला सामने नहीं आया जिसमें कैग के अपने 'चाय-पानी' रिवाज पर चोट की गई हो।
- क्या यह जगजाहिर नहीं है कि कैग की हर ऑडिट-पार्टी, उन तमाम सरकारी कार्यालयों से चाय-पानी लेती है जहाँ पर ऑडिट के लिए जाती है ? इस रिवाज को समाप्त करने के लिए विनोद राय के कार्यकाल में कोई पहल क्यों नहीं की गई ?
- तमाम बड़े घोटाले कांग्रेसी सरकार के ही निकाले गए। क्या पूर्ववर्ती भाजपाई सरकार दाग़दार नहीं थी ? विनोद राय ने स्वयं कभी ऐसे घोटालों पर उंगली नहीं उठाई।
- कैग के कार्यकलापों में पारदर्शिता लाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए। कहते हैं दूसरों को ठीक करने से पहले खुद को ठीक करना चाहिए। चलो, पहले न सही, तो साथ-साथ ही १००-५० कैग स्टॉफ की कारगुज़ारियां तो सामने लाई ही जा सकती हैं।
- सारे देश में फ़ैले कैग तंत्र की भ्रष्ट गतिविधियों पर लगाम न लगाकर उनकी ब्लैकमेल करने की क्षमता को ही बढ़ावा दिया गया। इसका जवाबदेय कौन होगा ?